सौंदर्य, शील और सुशासन की देवी
रानी दुर्गावती

ए.डी.एन. वाजपेयी

रानी दुर्गावती का नाम आते ही एक ऐसा बिंब आँखों के सामने उभरकर आता है, जिसमें सुंदरता कूट-कूट कर भरी है, शौर्य और पराक्रम से भरा हुआ व सकल प्रजा के प्रति अनुराग और सुशासन के लिए कुशाग्र भक्तिपरक है। राष्ट्र-प्रेम के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए तत्परता है और प्राणी मात्र के लिए अनंत करुणा से भरी हुई आत्मा है। 5 अक्टूबर 1524 कालिंजर दुर्ग वर्तमान में जिला बाँदा में महाराजा कीरत सिंह के घर अवतरित होकर मात्र 39 वर्ष 8 महीने और 19 दिन की जीवन यात्रा संपन्न कर 24 जून 1564 को जबलपुर के पास बरेला स्थित नरई नाला में प्राणों का राष्ट्रहित में बलिदान कर इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर हिरण्य हस्ताक्षर कर पूरे भारतवर्ष का नाम आलोकित किया। रानी दुर्गावती शोध संस्थान द्वारा आयोजित रानी दुर्गावती के 439वें जन्मदिवस पर शौर्य यात्रा में रोमांचकारी अनुभव जो नरई नाला की संग्रामपुर, हटा, दमोह, पन्ना, अमानगंज होते हुए संपन्न हुई। स्थान-स्थान पर यात्रा का स्वागत हुआ व विद्वानों ने रानी के प्रति अपने भाव प्रकट किए। वहीं स्थानीय महानुभावों ने भी अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की, विशेष तौर पर श्री खड़क सिंह सिंगरामपुर में स्वरचित कविता 'रानी दुर्गावती' सबको सुनाई और इस यात्रा का उद्देश्य रानी दुर्गावती पर शोध अनुसंधान को प्रेरित करना तथा जन जागरण करना भी रहा। रानी दुर्गावती के बलिदान व जन्म-स्थल को जोड़ने वाली शौर्य यात्रा के संदर्भ में महाकवि बलबीर सिंह 'रंग' के एक गीत का शीर्षक उद्धृत करना चाहूँगा। मरण को जन्म समझे, मैं उसे जीवन कहूँगा। कालिंजर दुर्ग पर व्यायाम करते समय मेरे अंतःकरण में एक योद्धा जाग्रत हुआ, मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं लाल किले पर तिरंगा फहरा रहा हूँ।

यह विदित है कि 5 अक्टूबर 1524 को दुर्गा अष्टमी थी इसलिए रानी दुर्गावती का नाम दुर्गावती रखा गया परंतु यथा नामो तथा गुण को साक्षात करते हुए रानी दुर्गावती में देवी दुर्गा के सभी गुण विद्यमान थे। रानी दुर्गावती में एक धीरोदात्त नायिका के समस्त तत्व विद्यमान थे जिन्हें सारांश में निम्न रूप में रेखांकित किया जा सकता है–1. सौंदर्य-सौष्ठव, 2. अदम्य साहस, 3. उत्साह से भरपूर नेतृत्व व निर्णय की क्षमता, 4. कुशल साम्राज्ञी, 5. समरसता सुशासन राष्ट्र धर्म की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग की तत्परता, 6. प्रकृति-प्रजाति व प्रजा के संरक्षण की भावना।

रानी दुर्गावती का जन्म-स्थल कालिंजर दुर्ग है जिसका अपना इतिहास है। यह दुर्ग सतयुग में भी था, द्वापर में भी इसका उल्लेख मिलता है, त्रेता में भी था, कलयुग में भी विद्यमान है। इस पर विजय प्राप्त करना प्रत्येक शासक अपने लिए बड़ी बात मानता है, पर यह अविजित रहा। शेरशाह सूरी का तो प्राणांत इस दुर्ग पर चंदेलों से युद्ध करते हुए 22 मई 1545 को हो गया था। कालिंजर दुर्ग से संबंधित बहुत सारे तथ्य हैं जिनका उल्लेख कर पाना संभव नहीं है, परंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है जिसे काल भी विजित न कर पाया और जिसने काल को जीत लिया ऐसा है कालिंजर दुर्ग जहाँ रानी दुर्गावती का जन्म हुआ। रानी दुर्गावती का विवाह गोंडवाना राज्य के महाराजा संग्राम सिंह के पुत्र दलपतशाह से हुआ। इनसे एक पुत्र वीरनारायण का जन्म हुआ, परंतु 8 वर्ष के दांपत्य जीवन का उपभोग कर पाईं रानी दुर्गावती और शेष जीवन राज्य पर न्योछावर कर दिया।

चंदेलवंशीय राजकुमारी का एक गोंड परिवार में विवाह होना उस समय की एक बड़ी क्रांति थी। रानी ने जब राज्य की बागडोर सँभाली तो उस समय उनकी आयु केवल 25 वर्ष की थी। गोंडवाना राज्य का क्षेत्रफल उस समय बहुत व्यापक था। जो मानचित्र उनके भौगोलिक क्षेत्रफल का मिलता है उसके अनुसार उत्तर में नरसिंहपुर, दक्षिण में बस्तर छत्तीसगढ़, पूर्व में संभलपुर (उड़ीसा) एवं पश्चिम में वर्धा (महाराष्ट्र) तक व्याप्त था। इस पूरे गोंडवाना राज्य का कुशल संचालन रानी दुर्गावती करती थीं।

रानी दुर्गावती के नाम से बहुत सारे प्रयोग व नवाचार जुड़े हैं, उसमें एक महत्वपूर्ण तालाब का निर्माण है। प्रकृति व पर्यावरण की सुरक्षा के लिए उन्होंने जबलपुर में 52 तालाबों का निर्माण कराया, जिसके कारण जबलपुर का तापमान ग्रीष्म ऋतु में न्यूनतम रहता था। अँग्रेज़ों ने भी बाद में इसीलिए जबलपुर को पसंद कर यहाँ प्रतिरक्षा के केंद्र खोले।

अपनी प्रजा के प्रति उनका प्रेम इस तथ्य से प्रदर्शित होता है कि उन्होंने तालाबों का नाम परिचारिकाओं व मंत्रियों के नाम पर कर दिया। तालाबों के अलावा उन्होंने मंदिर, धर्मशालाओं का निर्माण भी कराया।

अपनी प्रजा और प्रकृति के प्रति प्रेम व संरक्षण का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा कि अकबर ने उनके सफेद हाथी सरमन और मंत्री आधार सिंह को माँगा था। यदि रानी अकबर की माँगें मान लेतीं तो संभवतः युद्ध टाला जा सकता था, पर रानी ने यह जानते हुए भी कि उनका अकबर से युद्ध प्राण घातक हो सकता है, उनको देने से मना कर दिया। रानी की प्रसिद्धि से यह सिद्ध है कि अकबर भी परेशान था। उस पर बाज़ बहादुर ने कई हमले किए जिन्हें रानी ने परास्त किया। आसफ़ खाँ ने युद्ध किया जिसमें 3000 मुग़ल मारे गए परंतु रानी उसका मुकाबला न कर पाई और 24 जून 1564 को स्वर्ग सिधार कर हमें राष्ट्र-धर्म की संस्कृति की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने की शिक्षा व प्रेरणा दे गईं। प्रश्न यह उठता है कि रानी दुर्गावती की इतिहासकारों ने उपेक्षा क्यों की? मुग़ल इतिहासकार पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो सकते थे, ब्रिटिश भी पूर्वाग्रहों से ग्रसित हो सकते थे, परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी रानी दुर्गावती की उपेक्षा इतिहासकारों व साहित्यकारों ने की है। यदि किसी ने उपेक्षा नहीं की होती तो भारतवर्ष के संवेदनशील मानस में उसकी अंतरात्मा में जिसमें हमेशा रानी दुर्गावती की स्मृति को अपने हृदय में सजाए रखा, मंडला से कालिंजर तक की जनता आज भी रानी दुर्गावती को वैसे ही याद करती है जैसे कल की घटना हो।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार शिवाजी, छत्रसाल को भूषण, पृथ्वीराज को चंदबरदाई मिले, महाराणा को श्याम नारायण पांडे, रानी लक्ष्मीबाई को सुभद्रा कुमारी

चौहान मिल गई, उसी प्रकार रानी दुर्गावती को कोई कवि या कवयित्री नहीं मिल पाई, जो दुर्गावती के शौर्य को काव्यरूप प्रदान करता जिसे दसवीं की कक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता। इस संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान की बहुचर्चित कविता 'खूब लड़ी मर्दानी' में उस पंक्ति को भी उद्धृत करना चाहूँगा, जिसमें उन्होंने कहा है–"चमक उठी सन् 57 में वह तलवार पुरानी थी।" इस पंक्ति में पुरानी तलवार का स्मरण महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि यह तलवार रानी दुर्गावती की थी जो लगभग 300 वर्ष बाद रानी लक्ष्मीबाई के हाथ में चमकी। रानी दुर्गावती दोनों हाथों से तलवार चलाती थी, उनके बारे में यह प्रसिद्ध है "दुर्गावती जय रण में निकली हाथों में थीं तलवारें दो।" रानी दुर्गावती से संबंधित अनुसंधान के लिए वर्तमान में कुछ विषय चयनित करना आवश्यक है जिनमें से कुछ विषय सुझाव की दृष्टि से निम्नलिखित हैं–

- इतिहासकारों ने रानी दुर्गावती की उपेक्षा की, क्योंकि वे स्त्री शासिका थीं इसीलिए? अथवा मुग़लों से युद्ध लड़ा इसलिए या आदिवासी साम्राज्ञी थीं इसलिए या उनके राज्य का क्षेत्रफल मुगल साम्राज्य की तुलना में छोटा था या कोई और।
- भौगोलिक दृष्टि से तत्कालीन गोंडवाना साम्राज्य का अत्याधुनिक क्षेत्रफल व उसकी विशेषताओं से संबंधित अनुसंधान।
- सामाजिक विज्ञान के संबंध में रानी दुर्गावती का सुशासन व आंतरिक सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था, मंत्रिमंडल की संरचना एवं लोकनीति, समरसता, विभिन्न जातियों, प्रजातियों को अधिकार एवं कर्तव्यबोध, स्त्री-शिक्षा व स्वतंत्रता एवं स्त्री कौशल विकास, अर्थ प्रबंधन इत्यादि।
- पर्यावरण एवं प्राकृतिक संरक्षण में तालाबों का निर्माण इत्यादि।
- धर्म व संस्कृति की रक्षा और मंदिरों, धर्मशालाओं इत्यादि का निर्माण।
- युद्धनीति एवं रणकौशल पर अनुसंधान।
- मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में उनका साहस, कठिनाइयों में आनंद की अनुभूति, साहसिक कार्यों के लिए तत्परता, नवाचार रूढ़ियों में प्रतिबंधित न होकर जीवन जीना, अनुशासित मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति इत्यादि।

रानी दुर्गावती की आधुनिक युग में अत्याधिक प्रासंगिकता है, जब छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए बड़े-बड़े लोग समझौते करने के लिए तैयार हैं। स्त्रियों को यथोचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है। देश, संस्कृति, धर्म के प्रति उदासीनता बढ़ रही है, युवा वर्ग के मन में अस्थिरता है, ऐसे समय रानी दुर्गावती का संपूर्ण जीवन और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। स्त्रियों के शारीरिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक विकास के और स्त्री-शिक्षा का समावेश आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

- प्रेरणा पथ, नवंबर-दिसंबर 2017, विद्या भारती, महाकौशल प्रांत।
- गढ़ा का गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- The Gond kingdom of Garha, Dr. Suresh Mishra, Manak Publications Pvt. Ltd., New Delhi.

ए.डी.एन. वाजपेयी–

पूर्व कुलपति शिमला, रीवा और चित्रकूट विश्वविद्यालय

आचार्य अर्थशास्त्र विभाग,

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर